कहानी

नन्ही बेस्सी

मार्क ट्वेन

1908

आलोचनात्मक यथार्थवाद की धारा की अभिव्यक्तियाँ उतने ही किस्म की थीं जितने किस्म के आलोचनात्मक यथार्थवादी थे। सब अनूठे। लेकिन इनमें भी मार्क ट्वेन का स्थान अद्वितीय है। मार्क ट्वेन ने सम्पत्ति-केन्द्रित समाज के मूल्यों, संस्कृति और रूढ़ियों पर चोट की।

वह आलोचनात्मक यथार्थवाद की कोई कड़ी न होकर उसके ऐसे पुरोधा हैं जो स्वयं एक ध्रुव तारे के समान हैं।

आज हमारे समाज में जैसी रूढ़ियाँ हैं, उसके मद्देनज़र हम महसूस करते हैं कि मार्क ट्वेन जिस तीखी और मारक शैली में रूढ़ियों पर चोट करते हैं, उन्हें यहाँ पढ़ने का एक विशेष महत्व है। भारतीय समाज उपभोक्ता सामग्रियों के इस्तेमाल में तो अव्वल है, लेकिन अपनी रूढ़ियों और दकियानूसी विचारों में भी उसे अव्वल कहा जा सकता है। ऐसे में मार्क ट्वेन की ये दो कहानियाँ विशेष तौर पर प्रासंगिक हैं। इन कहानियों में नैतिकता के आदर्श और असल ज़िन्दगी के फर्क को दिखला कर, खोखली नैतिक शिक्षाओं पर चोट की गई है।

-सम्पादक

अध्याय - 1

नन्ही बेस्सी ईश्वर की सहायता करेगी

नन्ही बेस्सी करीब तीन साल की थी। वह एक अच्छी बच्ची थी। उसमें कोई छिछलापन या तुच्छता नहीं थी। वह चिन्तनशील और विचारशील थी और चीज़ों के पीछे के कारण को ढूँढने में और उनमें सामंजस्य बैठाने में लगी रहती थी। एक दिन उसने कहा –

"अम्मा, यहाँ इतनी तकलीफ़ें, दुःख और परेशानियाँ क्यों हैं? आखिर इनका क्या काम है?"

यह एक आसान प्रश्न था, और इसका उत्तर देने में अम्मा को कोई दिक्कत नहीं पेश आई।

"यह सब हमारे भले के लिए है, मेरी बच्ची। ईश्वर अपने विवेक और दयालु प्रवृत्ति से ये तकलीफ़ें हमें देता है ताकि हम अनुशासित हो सकें, और बेहतर बन सकें।"

"क्या इन तकलीफ़ों को *वह* भेजता है?"

"हाँ।"

"क्या सारी तकलीफ़ों को *वह ही* भेजता है?"

"हाँ, प्यारी, सारी तकलीफ़ों को। उनमें से एक भी संयोग से नहीं आती। सिर्फ वही उन्हें भेजता है, और हमेशा इसलिए कि वह हमें प्यार करता है, और हमें बेहतर बनाता है।"

"यह अजीब नहीं है?"

"अजीब? क्यों, नहीं, मैंने इस तरह कभी नहीं सोचा। मैंने कभी किसी को इसे अजीब कहते नहीं सुना। मुझे तो यह हमेशा नैसर्गिक, सही, विवेकपूर्ण और सबसे दयावान और करुणावान लगा है।"

"इस तरह सबसे पहले किसने सोचा था, अम्मा? क्या तुमने?"

"ओह, नहीं, बेटी, मुझे ऐसा सिखाया गया था।"

"तुम्हें ऐसा किसने सिखाया था, अम्मा?"

"क्यों, असल में, मैं नहीं जानती—मुझे याद नहीं आ रहा। मेरे ख़्याल से मेरी माँ ने; या प्रवचनदाता ने। लेकिन यह तो ऐसी चीज़ है जिसे हर कोई जानता है।"

"लेकिन यह फिर भी अजीब लगता है। क्या ईश्वर ने ही नॉरिस को टाइफस दिया था?"

"हाँ।"

"किसलिए?"

"क्यों, उसे अनुशासित करने और अच्छा बनाने के लिए।"

"लेकिन वह तो मर गया अम्मा, इसलिए यह तो उसे अच्छा *नहीं बना सका।*"

"अच्छा, तो, फिर मेरे ख़्याल से यह किसी और वजह से होगा। चाहे कोई भी वजह हो, हम इतना जानते हैं कि वह कोई *वाजिब* वजह होगी।"

"तुम्हारे विचार में यह वजह क्या थी, अम्मा?"

"ओहो, तुम इतने सवाल करती हो! मेरा ख़्याल है कि यह उसके माता-पिता को अनुशासित करने के लिए था।"

"तब तो यह सही नहीं है, अम्मा। उन लोगों के लिए उस बेचारे *की* जिन्दगी क्यों छीनी जाए, जब वह कुछ नहीं कर रहा था?"

"ओहो, मुझे नहीं मालूम! मुझे बस इतना पता है कि यह किसी अच्छी

और विवेकपूर्ण और दयावान वजह से हुआ।"

"कौन सी वजह, अम्मा?"

"मेरे ख़्याल से—मेरे ख़्याल से—देखो, यह एक निर्णय था; यह उन्हें उनके किसी पाप की सज़ा देने के लिए था।"

"लेकिन सज़ा जिसे मिली वह तो *बिली* था, अम्मा। क्या यह सही है?"

"निश्चित रूप से, निश्चित रूप से। ईश्वर ऐसा कुछ नहीं करता जो सही, विवेकपूर्ण और दयावान न हो। प्यारी बच्ची, तुम अभी ये बातें नहीं समझ सकती, लेकिन जब तुम बड़ी हो जाओगी तो समझ जाओगी, और जान जाओगी कि ये न्यायपूर्ण और विवेकपूर्ण है।"

क्षण भर के विराम के बाद :

"क्या ईश्वर ने ही उस अजनबी पर घर की छत को गिरा दिया था जो आग में से अपाहिज बुढ़िया को बचाने की कोशिश कर रहा था?"

"हाँ, मेरी बच्ची। *रुको*! यह मत पूछना कि क्यों, क्योंकि मैं नहीं जानती। मैं बस इतना जानती हूं कि यह किसी न किसी को अनुशासित करने के लिए था, किसी पर फैसला था, या ईश्वर ने अपनी शक्ति दिखाने के लिए ऐसा किया था।"

"वह शराबी जिसने मिसेज वेल्थ के बच्चे को काँटा घोंप दिया जब —"

"उस पर ध्यान मत दो, तुम्हें ब्योरों में जाने की ज़रूरत नहीं है। *इतना* तो निश्चित है कि वह उस बच्चे को अनुशासित करने के लिए था। ख़ैर।"

"अम्मा, मि. बर्गेस ने अपने प्रवचन में कहा था कि हमें कॉलरा, टाइफाइड और लॉकजा जैसी हज़ारों बीमारियाँ देने के लिए करोड़ों सूक्ष्म जीव हममें भेजे जाते हैं—अम्मा, क्या ईश्वर उन्हें भेजता है?"

"ओह, बिल्कुल मेरी बच्ची, निश्चित रूप से। जाहिरा तौर पर।"

"किसलिए?"

"ओहो, हमें *अनुशासित* करने के लिए! क्या मैं बार-बार तुम्हें यह बता नहीं चुकी हूँ?"

"यह तो भयंकर क्रूरता है, अम्मा! और मूर्खता भी! अगर मैं—"

"हश, ओह, *हश*! क्या तुम क़हर बरपा करना चाहती हो?"

"अम्मा तुम्हें पता है, पिछले सप्ताह बिजली *गिरी* और उसने नए चर्च को जला डाला। क्या यह चर्च को अनुशासित करने के लिए था?"

(थककर)। "ओह, मेरे खयाल से, हाँ।"

"लेकिन इससे एक सुअर मारा गया जो कुछ नहीं कर रहा था। क्या यह सब उस सुअर को अनुशासित करने के लिए किया गया था, अम्मा?"

"प्यारी बच्ची, क्या तुम थोड़ी देर बाहर जाकर नहीं खेलना चाहोगी? अगर तुम चाहो तो..."

"अम्मा, जरा सोचो! मि. होलिस्टर कहते हैं कि एक भी चिड़िया या साँप या किसी भी दूसरे जीव की किसी से दुश्मनी नहीं है, कि ईश्वर ने उन्हें काटने या दौड़ाने और सताने, और मार डालने, और खून चूसने और इस तरह उसे अनुशासित करने और अच्छा और धार्मिक बनाने के लिए उन्हें भेजा है। माँ, क्या यह सच है—क्योंकि अगर यह सच है, तो मि. होलिस्टर इस पर हँसते क्यों हैं?"

"वो होलिस्टर एक बदनाम आदमी है, और मैं चाहती हूँ कि तुम उसकी बातें मत सुना करो।"

"क्यों अम्मा, वह बहुत दिलचस्प हैं और अच्छा बनने की कोशिश करते हैं। वह कहते हैं कि ततैये मकड़ियों को पकड़कर उनके जालों में घुसा देते हैं—*ज़िन्दा*, अम्मा!—और वे दिनों-दिन वहीं रहती हैं और तड़पती रहती हैं, और भूखे ततैये सारे समय उनकी टाँगें चबाते रहते हैं और उनके पेट कुतरते रहते हैं, ताकि वे उन्हें अच्छा और धार्मिक बना सकें और वे भगवान की उसकी अनन्त दयाओं के लिए प्रशंसा करें। मुझे लगता है मि. होलिस्टर बहुत प्यारे हैं और हमेशा इतने उदार रहते हैं; क्योंकि जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वह कभी किसी मकड़ी से ऐसा बर्ताव करेंगे, तो उन्होंने कहा कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो उन्हें नर्क नसीब होगा; और फिर वह..."

"मेरी बच्ची! ओह, भगवान की ख़ातिर..."

"और अम्मा, वह कहते हैं कि मकड़ी को मक्खी को पकड़ने और अपने विषैले दाँत उसकी अँतड़ियों में घुसा देने और उसका खून चूसते जाने के लिए नियुक्त किया गया है, ताकि उसे अनुशासित करके ईसाई बनाया जा सके; और जब इस तकलीफ़ और पीड़ा से मक्खी अपने पंख फड़फड़ाती है, तो तुम उसकी कृतज्ञ आँखों में देख सकती हो कि वह सारी अच्छाइयों के दाता को धन्यवाद दे रही है—वेल, मि. होलिस्टर कहते हैं कि वह बस अपनी इज़्ज़त बचाती है; और वह यह भी..."

"ओफ़, तुम बात करने से थकोगी नहीं क्या! अगर तुम बाहर जाकर खेलना चाहती हो तो..."

"अम्मा, वह तो खुद कहते हैं कि सारी दिक्कतें और तकलीफ़ें और दुर्गतियाँ और सड़े हुए रोग और भयानक चीज़ें और बुरी चीज़ें हमें अनुशासित करने के लिए दया और उदारता के कारण भेजी जाती हैं; और वह कहते हैं कि ईश्वर की हर सम्भव तरीके से *मदद करना* हर माँ-बाप का कर्त्तव्य है। और वह कहते हैं कि महज हड़काने और कोड़े लगाने से वे यह काम नहीं कर सकते, क्योंकि इससे बात नहीं बनेगी, ये कमज़ोर कदम हैं और किसी काम के नहीं है—ईश्वर का तरीका सबसे अच्छा है, — हर किसी को अनुशासित करना, उन्हें अपाहिज बना देना और मार डालना, हर माता-पिता का फर्ज़ बल्कि हर *व्यक्ति* का फर्ज़ है; उन्हें हर किसी को भूख से तड़पाना चाहिए, और उन्हें जमा डालना चाहिए, रोगों से सड़ा डालना चाहिए, और उन्हें खून और चोरी करने और बेइज़्ज़त और बदनाम होने पर मजबूर कर देना चाहिए; और वह कहते हैं कि हमें और जानवरों को अनुशासित करने के लिए ईश्वर द्वारा किया गया आविष्कार अब तक कि सबसे शानदार तरकीब है, और कोई मूर्ख भी इससे अच्छी युक्ति नहीं खोज सकता। अम्मा, एडी भइया को इसी तरह अनुशासित

किए जाने की ज़रूरत है; और मैं जानती हूँ कि तुम उसके लिए चेचक, खुजली, डिप्थीरिया, हड्डी-क्षय, हृदय रोग और क्षय रोग जैसी बीमारियाँ कहाँ से ला सकती हो, और—अरे, प्यारी अम्मा तुम बेहोश हो गयी! मैं दौड़कर मदद के लिए जाती हूँ। अब इस गर्म मौसम में शहर में रहने का *यह* फल मिला।"

अध्याय - 2

मनुष्य की रचना

अम्मा – ढीठ बच्ची, क्या तुम अभी भी उस अधम नीच होलिस्टर से मिलती रहती हो?

बेस्सी – अम्मा, वह बहुत दिलचस्प हैं, हालाँकि थोड़े-से बदमाश हैं, और मैं दिलचस्प लोगों को पसन्द करने से खुद को रोक नहीं पाती। हमारे बीच यह बातचीत हुई :

होलिस्टर – बेस्सी, फर्ज करो कि तुमने थोड़ा मांस, थोड़ी हड्डी और रोएँ लिए, और उसे एक बिल्ली बनाई और उसे कहा कि अब तुम किसी जीव के प्रति निर्दयी नहीं रहोगे, वरना तुम्हें सज़ा और मौत दी जाएगी। और मान लो कि बिल्ली ने इस आदेश का पालन नहीं किया, एक चूहे को पकड़कर तड़पाया और उसे मार दिया। तुम उस बिल्ली के साथ क्या करोगी?

बेस्सी – कुछ नहीं।

होलिस्टर – क्यों?

बेस्सी – क्योंकि मैं जानती हूँ कि बिल्ली क्या कहेगी वह कहेगी यह तो मेरा स्वभाव है। मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती; मैंने अपना स्वभाव नहीं बनाया है, *तुमने* बनाया है। इसलिए मैंने जो किया है उसके लिए तुम ज़िम्मेदार हो—मैं नहीं। मैं इसका जवाब नहीं दे सकती, मि. होलिस्टर।

होलिस्टर – फ्रैंकेस्टाइन और उसके दैत्य के साथ भी यही मामला है।

बेस्सी – वह क्या है?

होलिस्टर – फ्रैंकेस्टाइन ने थोड़ा मांस, हड्डी और खून लिया और उससे एक आदमी बना दिया; वह आदमी भाग गया और हर जगह बलात्कार, डकैती और खून करता घूमने लगा। फ्रैंकेस्टाइन भयाक्रान्त हो गया और उसने निराशा में कहा, '*मैंने* उसे बनाया, बिना उसकी सहमति लिये, और इस तरह वह जो भी अपराध करता है उसका ज़िम्मेदार *मैं* हूँ। अपराधी *मैं* हूँ, वह बेकसूर है।'

बेस्सी – निश्चित रूप से वह सही था।

होलिस्टर – मेरा नतीजा भी यही है। यही बात ईश्वर और मनुष्य के लिए और तुम्हारे और बिल्ली के लिए भी सही है।

बेस्सी – ऐसा कैसे?

होलिस्टर – ईश्वर ने मनुष्य को बिना उसकी सहमति के बनाया और उसका स्वभाव भी बनाया; उसको फ़रिश्तों जैसा बनाने की बजाय दुष्ट बनाया और फिर कहा, 'फ़रिश्तों-सा बनो, वरना मैं तुम्हें सज़ा दूँगा और तबाह कर डालूँगा। लेकिन इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, चाहे जो हो, आदमी जो भी करता है,

(पेज 33 पर जारी)

युवा रचनात्मता शिविर का आयोजन

(पेज 32 से जारी)

लेकिन आज देश में मनुष्य और प्रकृति के बीच में मुनाफ़े की दीवार खड़ी है। मज़दूरों से 14-18 घण्टे काम कराया जाता है। अगर उनसे 6-6 घण्टा काम लिया जाय तो रोज़गार के अवसर तिगुने हो जाते हैं। विकास कार्यों की इस देश में इतनी सम्भावनाएँ हैं; अगर इस काम को हाथ में लिया जाय तो रोज़गार भारी मात्रा में पैदा हो सकते हैं। लेकिन एक पूँजीवादी व्यवस्था में इन कामों में लाभ न होने के कारण और पूँजी निवेश विकास की पूर्वशर्त होने के कारण ये काम नहीं होते; नतीजा—न विकास होता है और न ही रोज़गार पैदा होते हैं।

इस सामूहिक विचार-विमर्श चक्र के बाद एक सामूहिक अध्ययन चक्र शुरू हुआ जिसमें भगत सिंह व भगवती चरण बोहरा द्वारा लिखित **नौजवान भारत सभा, लाहौर का घोषणापत्र** का सामूहिक अध्ययन किया गया।

फिर एक खेल खेला गया जिसमें पर्चियाँ बनाकर वितरित कर दी गईं। हर पर्ची में कोई न कोई दिलचस्प और मज़ेदार गतिविधि दर्ज थी। जिसकी पर्ची में जो लिखा था उसे वह करके दिखाना था। इस खेल का सभी ने खूब आनन्द उठाया।

इसके बाद **नौभास** के प्रसेन का वक्तव्य हुआ जिसका विषय था – **नौजवान और सामाजिक रूढ़ियाँ**। प्रसेन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि आज कूपमण्डूकता, अंधविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने में नौजवानों को पहल लेनी होगी और मिसाल कायम करनी होगी। प्रसेन ने राहुल सांकृत्यायन के उस उद्धरण की याद दिलायी जिसमें उन्होंने कहा है आज बाह्य क्रान्ति से अधिक आवश्यकता मानसिक क्रान्ति की है और हमें अपने दोनों हाथों में तर्क की तलवार नचाते हुए सामाजिक रूढ़ियों और कूपमण्डूकता के बन्धनों को काट डालना होगा और तभी इस समाज का उत्थान होगा। प्रसेन ने कहा कि हमें तार्किकता के प्रचार-प्रसार पर भी पर्याप्त ज़ोर देना होगा।

इसके बाद **मैजिक शो** हुआ जिसमें पवन और योगेश ने ढोंगी बाबा बनकर दिखलाया कि तथाकथित बाबा और सन्त लोगों को कैसे बेवकूफ बनाते हैं। उन्होंने ऐसी कई तरकीबें दिखलाईं और उनके पीछे का तर्क दिखलाया, जैसे, कपड़े में मंत्र पढ़कर आग लगाना, नारियल में आग लगाना, रस्सी को सीधा हवा में टाँगना, जीभ से सरिया आर-पार करना, आदि।

इसके बाद रूसी क्रान्ति पर बनी फिल्म **वे दस दिन जब दुनिया हिल उठी** का प्रदर्शन किया गया। इसमें रूसी क्रान्ति के पूरे इतिहास को दिखलाया गया था और विश्व इतिहास में उसके महत्व को समझाया गया था।

इसके बाद समूहगान हुआ और फिर एक **मशाल जुलूस** निकाला गया जिसमें करीब 100 लोग मशालों के साथ करावल नगर क्षेत्र के विभिन्न मुहल्लों में गये और भगत सिंह के संकल्प को ताजा करने की शपथ ली गई और यह कसम खाई गई कि हम तब तक संघर्ष करते रहेंगे जब तक भगत सिंह और उनके साथियों के सपनों के भारत का निर्माण नहीं कर लेते।

इसके बाद रात में शिविर स्थल पर 1 बजे से **दि लीजेण्ड ऑफ़ भगत सिंह** नामक फिल्म का प्रदर्शन हुआ और शपथ ग्रहण के साथ शिविर का समापन हुआ।

नन्ही बेस्सी

(पेज 20 से जारी)

उसका ज़िम्मेदार भगवान होता है। केवल एक ही अपराधी है और वह मनुष्य नहीं है।'

अम्मा – यह वीभत्स है! यह दुष्टतापूर्ण, ईश्वर-निन्दा, अधार्मिक और भयानक है!

बेस्सी – हाँ अम्मा, लेकिन यह सच है। मैं तो बिल्ली बनाने नहीं जा रही। अगर मैं एक अच्छी बिल्ली नहीं बना सकती तो नहीं बनाऊँगी।

अध्याय - 3

अम्मा, अगर जोंस नाम का कोई आदमी स्मिथ नाम के किसी आदमी को बस मनोरंजन के लिए मार डालता है, तो वह हत्या होगी, है न, और जोंस हत्यारा होगा?

हाँ, मेरी बच्ची।

और इसके लिए जोंस सज़ा के क़ाबिल है?

हाँ, मेरी बच्ची।

क्यों, अम्मा?

क्यों? क्योंकि **दस आदेशों** में ईश्वर ने नरसंहार की मनाही की है, और इसलिए जो कोई भी किसी व्यक्ति को मारता है, वह अपराध करता है और उसे इसका फल भोगना होगा।

लेकिन अम्मा, मान लो कि जन्म से ही जोंस का ऐसा हिंसक स्वभाव है और वह उसे नियंत्रित नहीं कर सकता, तो?

उसे अपने आपको नियंत्रित *करना ही होगा*। ईश्वर को इसकी आवश्यकता है।

लेकिन उसने अपना मिजाज़ नहीं बनाया, अम्मा, वह वैसे मिजाज़ के साथ ही पैदा हुआ है, जैसे कि ख़रगोश और बाघ; और इसलिए, वह कैसे जिम्मेदार हुआ?

क्योंकि ईश्वर *कहता है* कि वह ज़िम्मेदार है, और उसे अपने स्वभाव पर नियंत्रण *करना होगा*।

लेकिन वह नहीं कर सकता, अम्मा; और इसलिए तुम्हें नहीं लगता कि हत्या ईश्वर कर रहा है और ज़िम्मेदार भी वह है, क्योंकि उसी ने तो जोंस को वह स्वभाव दिया जिस पर वह नियंत्रण नहीं कर सकता?

शांति, मेरी बच्ची! उसे नियंत्रण *करना ही होगी*, क्योंकि ईश्वर को इसकी जरूरत है और यहीं बात खत्म हो जाती है। यह बात को निपटा देता है, और इसके आगे बहस की कोई गुंजाइश नहीं है।

(*चिन्तनशील विराम के बाद*) मुझे नहीं लगता कि इससे बात निपट जाती है। अम्मा, हत्या हत्या है, है न? और जो भी इसे करता है, वह हत्यारा है? यह एक सीधी, सरल सच्चाई है, है न?

(संदेह के साथ) अब तुम क्या नतीजा निकाल रही हो, मेरी बच्ची?

अम्मा, जब ईश्वर ने जोंस को तैयार किया तो वह उसे एक खरगोश का स्वभाव भी दे सकता था, अगर वह चाहता, नहीं?

हाँ।

फिर जोंस किसी को नहीं मारता और उसे फाँसी नहीं चढ़ना पड़ता?

सच है।

लेकिन उसने जोंस को ऐसा स्वभाव देना चुना जो उसे स्मिथ को मारने पर *मजबूर कर* देगा। क्यों, फिर, वह ज़िम्मेदार नहीं है?

क्योंकि उसने जोंस को एक बाइबिल भी दी। बाइबिल जोंस को हत्या न करने की पर्याप्त चेतावनी देती है। इसलिए जोंस अगर ऐसा करता है तो इसके लिए सिर्फ वही ज़िम्मेदार है।

(*एक और विराम*) अम्मा, क्या ईश्वर ने मक्खी को बनाया?

निश्चित रूप से, मेरी प्यारी।

किसलिए?

किसी महान और अच्छे उद्देश्य के लिए, अम्मा?

हम नहीं जानते मेरी बच्ची। हम बस इतना जानते हैं कि वह *हर चीज* किस महान और अच्छे उद्देश्य के लिए बनाता है। लेकिन यह तीन साल से थोड़ी-सी बड़ी, प्यारी नन्ही बेस्सी के लिए बहुत ज्यादा बड़ा विषय है।

शायद अम्मा, लेकिन इसमें मुझे बहुत दिलचस्पी है।

मैं सबसे नयी वाली विज्ञान की किताब में मक्खियों के बारे में पढ़ रही थी। उसे "धरती पर रहने वाले जीवों में सबसे ख़तरनाक और हत्यारा जीव बताया गया है जो हर साल स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों में जानलेवा रोग फैलाकर हज़ारों की संख्या में उनकी जान लेती है।" ज़रा सोचो अम्मा, सभी जीवों में **सबसे ज्यादा ख़तरनाक**! हर तरह से वह ईश्वर द्वारा बनाये गये जीवों में वह सबसे बड़ा हत्यारा है। इस किताब में देखो क्या लिखा है :

मक्खी किसी भी प्रकार की गन्दगी की गन्ध के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। जब भी ऐसी कोई गन्दगी सौ गज के दायरे में होती है तो वह जाती है और अपना मुँह और अपने छह पैरों के चिपचिपे बालों को उसमें लपेट लेती है। एक या दो सेकेण्ड ही रोग के इन कीटाणुओं को हज़ारों की संख्या में इकट्ठा करने के लिए काफ़ी होते हैं, और फिर मक्खी सबसे करीब वाली रसोई या भोजन-कक्ष में जाती है। वहाँ मक्खी मीट, मक्खन, ब्रेड, केक, और जो भी उसे मिलता है उस पर रेंगती है और दूध के मटके तक में घुस जाती है, और अपने हर कदम पर बड़ी संख्या में रोगाणुओं को छोड़ती जाती है। मक्खी जितनी घिनौनी होती है उतनी ही खतरनाक भी।

यह भयंकर है, अम्मा! एक मक्खी जून और जुलाई के 60 दिनों में बावन अरब बच्चे पैदा करती है, और वे बीमारों पर रेंगती हैं और मवाद, और बलगम और फोड़ों से निकलने वाली

गन्दगी में खेलती हैं, और हर प्रकार के रोगाणुओं से अपने आपको लपेट लेती हैं, फिर वे हर किसी के खाने की टेबल पर जाती है और इन रोगाणुओं को मक्खन और दूसरे खाद्य पदार्थों पर झाड़ देती हैं, और इस घिनौने क्रियाकलाप से कई तकलीफ़देह बीमारियाँ होती हैं और मौत भी हो जाती है। अम्मा सिर्फ न्यूयार्क शहर में वे हर साल सात हज़ार लोगों की जान लेती हैं—वे लोग जिनसे उनका कोई झगड़ा नहीं है। बिना कारण के जान लेना हत्या है—कोई इस बात से इंकार नहीं करता। अम्मा?

हाँ?

क्या मक्खियों के पास बाइबिल है?

जाहिरा तौर पर नहीं है।

तुमने कहा था कि यह बाइबिल है जो आदमी को ज़िम्मेदार बनाती है। अगर ईश्वर ने मक्खी को उस स्वभाव पर काबू करने के लिए बाइबिल नहीं दी, जो स्वभाव स्वयं उसने बनाया है, तो ईश्वर ही जिम्मेदार हुआ। उसी ने मक्खी को यह हत्यारा स्वभाव दिया और फिर उसे बाइबिल या किसी और बाधा से रोके बिना थोक भाव से हत्याएँ करने भेज दिया। और इस तरह ईश्वर स्वयं जिम्मेदार है। ईश्वर एक हत्यारा है। मि. होलिस्टर ऐसा कहते हैं। मि. होलिस्टर कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के लिए एक और अपने लिए दूसरा नैतिक नियम नहीं बना सकता। वह कहते हैं कि यह हास्यास्पद होगा।

चुप हो जाओ! काश वह जहन्नुम में होता! वह एक अधर्मी, अतार्किक, बेतुका गधा है, और मैं बार-बार तुम्हें बता चुकी हूँ उसकी जहरीली संगत से दूर रहो।

अध्याय - 4

"अम्मा, कुँवारी क्या होती है?"

"एक अविवाहिता।"

"अविवाहिता क्या होती है?"

"कोई लड़की या औरत जिसकी शादी न हुई हो।"

"जोनास चाचा कहते हैं कि कभी-कभी कोई कुँवारी जिसका बच्चा हो..."

"बकवास! किसी कुँवारी को बच्चा नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता, अम्मा?"

"कुछ कारण हैं जिनसे ऐसा नहीं हो सकता।"

"कौन-से कारण अम्मा?"

"शारीरिक। बच्चा पैदा करने से पहले उसे अपना कुँवारापन तोड़ना होगा।"

"क्या मतलब, अम्मा?"

"चलो, देखते हैं। यह कुछ ऐसा है : कोई यहूदी ईसाई बनने के बाद यहूदी नहीं रह सकता; वह एक साथ ईसाई और यहूदी दोनों नहीं हो सकता। बस वैसे ही, कोई औरत एक साथ माँ और कुँवारी नहीं हो सकती।"

"क्यों अम्मा, सैली ब्रुक्स का एक बच्चा है, और वह कुँवारी है।"

"वाकई? कौन कहता है?"

"वह खुद ऐसा कहती है।"

"ओह। बेशक! क्या कोई और गवाह है?"

"हाँ—एक सपना आया था। वह कहती है कि गर्वनर का निजी सचिव सपने में आया और उसने उसे बताया कि उसे बच्चा होने जा रहा है, और बिल्कुल ऐसा ही हुआ।"

"कोई ताज्जुब नहीं! क्या उस सचिव ने यह भी कहा कि अपराध में बराबर का ज़िम्मेदार गर्वनर था?"

अध्याय - 5

बेस्सी – अम्मा, तुमने मुझे बताया था न कि कोई पूर्व-गर्वनर, जैसे कि मि. बर्लप, वह होता है जो गर्वनर रहा हो, पर अब गर्वनर न हो?

अम्मा – हाँ, प्यारी।

बेस्सी – और मि. विलियम्स कहते हैं कि "पूर्व" का मतलब हमेशा 'रहा है' होता है, है न?

अम्मा – हाँ, बच्ची। यह एक भोण्डा तरीका है, लेकिन इससे मतलब निकल जाता है।

बेस्सी (उतावलेपन के साथ) – इसका मतलब, आख़िर मि. होलिस्टर सही थे। वह कहते हैं कि कुँवारी मैरी अब कुँवारी नहीं है। वह कभी थी। वह कहते हैं–

अम्मा – यह झूठ है! ओह, वह नास्तिक पापी एक मासूम बच्ची की पवित्र आस्थाओं को अपने मूर्खतापूर्ण झूठों से नष्ट करने की कोशिश करता रहता है। अगर मेरा बस चलता, तो मैं–

बेस्सी – लेकिन अम्मा,–ईमानदारी और सच्चाई से बताओ—क्या वह अब भी कुँवारी है—एक असली कुँवारी, क्यों?

अम्मा – बिल्कुल, वह है; और वह कुँवारी के अलावा और कुछ भी नहीं रही है—ओह, वह प्रशंसनीय, शुद्ध, बेदाग, और अकलुषित!

बेस्सी – अम्मा, मि. होलिस्टर क्यों कहते हैं कि वह *नहीं हो सकती*। यही तो *वह* कहते हैं। वह कहते हैं कि वह बच्चा पैदा होने के बाद उनके पाँच बच्चे हुए जो अनुपस्थित उपाय से पैदा हुआ था जिसने कुछ नहीं तोड़ा और मि. होलिस्टर सोचते हैं कि सालों-साल के दौरान इतने बच्चे पैदा करने से किसी भी कुँवारी का कुँवारापन इतना झीना हो जाएगा कि वॉल स्ट्रीट भी इस स्टॉक को बेहद कमजोर मानेगा और आप उसे किसी भी डिस्काउण्ट पर वहाँ नहीं रख पाएँगे, क्योंकि बोर्ड कहेगा कि यह तो वाइल्डकैट है, और उसे सूचीबद्ध नहीं करेगा। *वह* ऐसा कहते हैं। और इसके अलावा–

अम्मा – फौरन नर्सरी जाओ! जाओ!

अध्याय - 6

"अम्मा, क्या ईसा भगवान है?"

"हाँ, मेरी बच्ची।"

"अम्मा, वह एक ही साथ खुद और कोई कैसे हो सकते हैं?"

"मेरी प्यारी, ऐसा नहीं है। वे सियामी जुड़वा बच्चे की

तरह हैं—दो व्यक्ति, एक-दूसरे के बाद पैदा हुए, लेकिन प्राधिकार में बराबर, शक्ति में बराबर।"

"अब मेरी समझ में आया, अम्मा, और यह एकदम सरल है। एक जुड़वा बच्चे ने अपनी माँ के साथ सम्भोग किया और खुद को और अपने भाई को पैदा किया; इसके बाद उसने अपनी दादी से सम्भोग किया और अपनी माँ को पैदा किया। मेरे ख्याल से यह मुश्किल रहा होगा, अम्मा, लेकिन दिलचस्प भी। ओह, कितना मुश्किल। मेरे विचार से सह-अपराधी..."

"भगवान के मामले में सबकुछ सम्भव है, मेरी बच्ची।"

"हाँ, शायद। लेकिन किसी और सियामी जुड़वा बच्चे के साथ नहीं, मेरे ख़्याल से। तुम्हें तो नहीं लगता न अम्मा कि कोई साधारण सियामी जुड़वा बच्चा अपनी माँ से सम्भोग कर अपने आपको और अपने भाई को पैदा कर सकता है, और फिर अपनी दादी से सम्भोग करके, *अपनी माँ* को भी पैदा कर सकता है, क्यों अम्मा?"

"निश्चित तौर पर नहीं, मेरी बच्ची। और कोई नहीं, सिर्फ ईश्वर ही इन आश्चर्यजनक और पवित्र चमत्कारों को अंजाम दे सकता है।"

"और उनका आनन्द उठा सकता है। निश्चित रूप से वह इसका आनन्द उठाता है, वरना वह इस कदर परिवार में शिकार करते न घूमता, है न, अम्मा?—जिससे गाँव में उनकी इज़्ज़त पर बट्टा लगता है और तरह-तरह की बातें होती हैं। मि. होलिस्टर कहते हैं कि उन दिनों में यह आश्चर्यजनक और महिमापूर्ण था, लेकिन अब कारगर नहीं है। वह कहते हैं कि अगर माँ मैरी आज शिकागो में होतीं, और गर्भवती हो जातीं और वह अखबार वालों को बतातीं कि ईश्वर की सह-अपराधी है, तो वह दस में से दो को भी यकीन नहीं दिला पातीं। वह कहते हैं कि ऐसे ढेर सारे लोग हैं!"

"मेरी बच्ची!"

"खैर, वह ऐसा कहते हैं।"

"ओह, *मैं चाहती हूँ* कि तुम उस दुष्ट, पापी आदमी से दूर रहो!"

"वह दुष्ट बनने का *इरादा* नहीं रखते, अम्मा, और वह ईश्वर को दोष नहीं देते। नहीं, वह ईश्वर को बिल्कुल दोष नहीं देते; वह कहते हैं कि वे सब—सारे ईश्वर—ऐसा ही करते हैं। यह उनकी आदत है, वे हमेशा से ऐसे ही रहे हैं।"

"कैसे रहे हैं, प्यारी?"

"कुँवारियों का कुँवारापन भंग करते हुए घूमते रहते हैं। वह कहते हैं कि इस विचार का आविष्कार ईश्वर ने नहीं किया—उसके पैदा होने से पहले ही यह पुराना और उबा देने वाला बन चुका था। मि. होलिस्टर कहते हैं कि उसने किसी चीज़ का आविष्कार नहीं किया, बल्कि उसे अपनी बाइबिल और अपने प्रलय और अपनी नैतिकता और अपने विचार पहले के ईश्वरों से मिले, और उन ईश्वरों को यह सब और पहले के ईश्वरों से मिला। वह कहते हैं कि अभी तक कोई ऐसा ईश्वर नहीं आया है जो किसी कुँवारी के गर्भ से पैदा न हुआ हो। मि. होलिस्टर कहते हैं कि जहाँ ईश्वर है वहाँ कोई कुँवारी सुरक्षित नहीं है। वह कहते हैं कि काश वह ईश्वर होते; वह कहते हैं कि वह कुँवारेपन को इतना दुर्लभ बना देते कि—"

"शांत, शांत! इतनी तेज़ी से *मत भागो*, मेरी बच्ची। अगर तुम—"

"—और उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं रात में अपने दरवाज़े बन्द कर लिया करूँ, क्योंकि"

"हश, हश, चुप हो जाओ!"

"—क्योंकि, हालाँकि, मैं अभी साढ़े तीन साल की ही हूँ और आदमियों से बिल्कुल सुरक्षित हूँ—"

"मैरी ऐन, आओ और इस बच्ची को ले जाओ! अब तुम जाओ, और तब तक मेरे पास मत आना जब तक तुम्हें धर्मशास्त्र से नीचे के स्तर के और उससे कम भयंकर किसी विषय में दिलचस्पी पैदा नहीं होती।"

बेस्सी (जाते हुए) – "मि. होलिस्टर कहते हैं कि ऐसा *कोई विषय नहीं।*"

(1908)

अनुवाद : अभिनव

राहुल फाउण्डेशन की ओर से नौजवानों के लिए कुछ बेहद ज़रूरी किताबें

● छात्र नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें	आह्वान पुस्तिका-एक	(10 रुपये)
● **An Appeal to the Young**	**Peter Kropotkin**	**(Rs. 10)**
● नौजवानों से दो बातें	पीटर क्रोपोटकिन	(10 रुपये)
● ईश्वर का बहिष्कार	राधामोहन गोकुलजी	(15 रुपये)
● लौकिक मार्ग	राधामोहन गोकुलजी	(15 रुपये)
● धर्म का ढकोसला	राधामोहन गोकुलजी	(15 रुपये)
● स्त्रियों की स्वाधीनता	राधामोहन गोकुलजी	(15 रुपये)
● क्रांतिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास	शिव वर्मा	(10 रुपये)
● संस्मृतियाँ	शिव वर्मा	(50 रुपये)
● भगत सिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति	बिपन चंद्र	(10 रुपये)
● भगत सिंह और उनके साथी	अजय घोष, गोपाल ठाकुर	(30 रुपये)